लोक संगीत नाट्य विधाओं का सांगीतिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक पक्ष

सचिव

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.)

बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली–110002

द्वारा स्वीकृत पी०डी०एफ० परियोजना के

अन्तर्गत संगीत विषय में प्रस्तुत

शोध–प्रबन्ध

2021

शोध निर्देशक

प्रो० रवि कुमार भटनागर
विभागाध्यक्ष
संगीत विभाग, कला संकाय

शोधार्थी

डॉ० निम्मी गुप्ता
पीएच० डी०

संगीत विभाग, कला संकाय

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)

दयालबाग़, आगरा–282005

संस्तुत्य

शोधार्थी ने पाँच वर्षों के अथक परिश्रम एवं प्रयास के फलस्वरूप प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को प्रस्तुत किया है। शोधार्थी ने विभिन्न कलाकारों से साक्षात्कार कर विषय सम्बन्धी सूचनाओं को एकत्र किया है। विधिवत् सम्पूर्ण साहित्य का गहन अध्ययन कर विषय वस्तु का सृजन एवं अन्वेषण किया है। शोध की जटिलताओं को दूर कर कलाकारों एवं लोकसंगीत नाट्यों से सामंजस्य बिठाया। कलाकारों के द्वारा प्राप्त सामग्री का स्वरांकन कर प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। लोक कलाकारों के रहन–सहन, भाषा, संवाद, गायन प्रणाली, वेशभूषा–श्रृंगार आदि का यथोचित मूल्यांकन कर प्रस्तुत किया है। गायन, वादन, अभिनय एवं सरल, सहज भाषा में निर्मित यह लोकसंगीत नाट्य भारतीय जीवन को उन्नत बनाने में सहायक है। लोक के आधार, लोक संगीत नाट्य तथा उसी आधार को प्रस्तुत करती यह परियोजना, इसका अध्ययन अत्यन्त आवश्यक था तथा भविष्य में इसमें बहुत सी सम्भावनायें निहित है। अतः शोधार्थी प्रस्तुत परियोजना की संस्तुति प्रदान करती है।

उपसंहार–

प्रस्तुत शोध ग्रंथ में शोधार्थी ने लोकनाट्यों की उस श्रृंखला का उल्लेख किया है जो लोक में लोक के हितार्थ उपस्थित रहते है। कला अथवा कला के विविध आयाम, किसी के चित्त को आनन्द देने के साथ–साथ उसकी सहायतार्थ भी उतने ही सजग एवं प्रयत्नशील रहते है। लोक कलाऐं, लोक संस्कृति एवं सभ्यता की नियमबद्ध प्रणाली होती है। एक लोक कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन 'सर्वजन सुखायः' के लिए करता है। जिसके बदले थोड़ा–सा सम्मान अथवा अपनेपन की चेष्टा करता है। कलाकार के लिए जब जोरदारी से तालियाँ बजाई जाती है। तत्काल ही उस कलाकार के मुख पर प्रसन्नता की लालिमा उभर कर आ जाती है। वह अभिवादन स्वीकार कर धन्यवाद ज्ञापन में अपना मस्तिष्क झुका देता है। उसकी वह प्रसन्नता सम्पूर्ण वातावरण को खुशनुमा बना देती है। वह कलाकार अपनी खुशी को भी बाँट देता है। उसको भी समर्पित कर देता है। एक कलाकार का व्यक्तित्व एक सच्चे सेवक के समान होता है।

वह जीवन पर्यन्त देश अथवा समाज की सेवा करता है। इसके लिए वह आखिरी सांस तक प्रयासरत रहता है। एक कला को समद्धशाली कलाकार ही बनाता है। वह अपने तपोबल, त्याग एवं पुरुषार्थ से आनन्द प्राप्त कर, दूसरो को आनन्दित कर देता है। उस कला के विभिन्न रूपों को अवतरित करता है।

लोकनाट्यों की छवि इतनी मौलिक एवं उत्कृष्ट है कि सहसा ही आकर्षित कर लेती है। रंग–बिरंगी पोशाके पहने, संस्कृति–सभ्यता को परिलक्षित करते,यह लोकनाट्य जीवन में उमंगों का संचार कर देते है। एक मनोवैज्ञानिक की समान कार्य करने के कारण, ये हमारे जीवन एवं देश को खुशी की सूची में शामिल करते है। स्वस्थ्य मनोरंजन उपलब्ध कराना, सहज नहीं होता। किन्तु लोकनाट्यों के माध्यम से सरल हो जाता है। यह गायन, वादन, नृत्य एवं अभिनय से सुसज्जित शैलियाँ एकता के सूत्र में पिरोकर, भेद–भाव रहित जीवन का निर्माण करती है। जीवन जीने का आनन्द अपनों के साथ आता है। प्रत्येक मनुष्य अपनी खुशियों को बाँटना चाहता है। प्रियजनों को शामिल करना चाहते है, किन्तु इस आधुनिक जीवन शैली ने सबको दूर–दूर और बहुत–दूर कर दिया है। लोकनाट्य अपनों को समीप लाने व गुदगुदाने के लिए बहुत कारगार सिद्ध हो सकते है। इस पहल के लिए क्या सरकारें ही कटिबद्ध है रहेंगी? नहीं, सरकार के साथ–साथ प्रत्येक व्यक्ति को इन्हें बचाने का दायित्व स्वीकार करना चाहिये।

प्रत्येक क्षेत्र में लोकनाट्यों एवं लोककलाओं को स्थान मिलना चाहिये। जिस प्रकार विद्यार्थी सभी विषयों को पढ़ता है और परीक्षा देता है, क्या उसी प्रकार लोकनाट्कों एवं कलाओं को पढ़ाकर, परीक्षा दिलवाने का कार्य नहीं किया जा सकती ऐसा करने से न केवल भारत आत्मनिर्भर बनेगा, अपितु खुशहाली रिर्पोट के सूचकांक में 144वें पायदान से ऊपर भी उठ जायेगा। भारतीयों में कितनी उदासीनता एवं नीरसता है, वह निरन्तर आत्महत्या के बढ़ते ग्राफ से पता चलता है। क्या समाज एवं परिवार अपने दायित्वों को पूर्ण करने में स्वयं को असमर्थ पा रहें है, या भारत में फैली कुरूतियों ने इसको इस घनघोर त्रासदी से जूझने पर मजबूर कर दिया है। किसी समय में 'सोने की चिड़ियाँ' कहलाने वाला भारत, क्या आज नीरस और उदास चिड़ियाँ बन गया है? उस चिड़ियाँ को खुले आकाश में पंख फैलाने का अवसर नहीं मिल रहा है या उसके

पंखों को कतर दिया गया है। चिड़िया इतनी उदास क्यों बैठी है? उसे अपने घोंसले और बच्चों को सुरक्षित न कर पाने का अहसास सता रहा है या वह भोजन न मिलने के कारण बहुत व्याकुल है। भोजन की तलाश में निरन्तर भटकने पर भी, उसे उसके हिस्से का भोजन प्राप्त नहीं हो पा रहा। आखिर चिड़ियाँ के दुःखी रहने के क्या कारण है? ऐसा क्यों है कि सरकार की लाख कोशिशों के बाबजूद भारतीय खुश नहीं है? इन सवालों के जबाब देने का प्रयास शोधार्थी ने किया है। शोधार्थी के अनुसार एक लोकनाट्य कला ही है, जो सम्पूर्ण धरा को खुशी व सौहार्द से भरकर, नवीन उर्जा प्रदान करने की क्षमता रखती है। लोकनाट्य के द्वारा समाज में फैली उदासीनता दूर हो सकती है। यह लोकनाट्य कलायें समाज की उन्नति में किस प्रकार सहायक है अथवा इनके माध्यम से कैसे विश्व पटल पर भारत की तस्वीर बदल सकती है, इसके सन्दर्भ में कुछ बिन्दु प्रस्तुत किये गये है जो अग्रलिखित है–

1. भारतीय एकता एवं अखण्डता का संरक्षण–

लोकनाट्य शैलियों के माध्यम से भारतीय एकता एवं अखण्डता का संदेश मिलता है। इनका प्रदर्शन किसी वर्ग विशेष या धर्म विशेष के लिए नहीं किया जाता अपितु समाज की छोटी से छोटी तथा बड़ी से बड़ी प्रत्येक इकाई के लिए किया जाता है। किसी प्रकार का भेदभाव एवं छूआ–छूत का यहाँ कोई प्रश्न नहीं उठता है। एकता के सूत्र में पिरोते हुये लोक संगीत नाट्य अखण्ड भारत के दिव्य–स्वप्न को साकार करते है। यह कार्य इतनी सरलता से भी पूर्ण किया जा सकता है, ऐसा संदेश भी देते है। लोकनाट्य भारतीय संस्कृति के सच्चे संरक्षक एवं संवाहक है। आज के समाज के बदलते परिवेश में इनकी आवश्यकता अवश्यभावी है। अराजकता, विद्रोह, लूट, हिंसा एवं कट्ट्रपंथी की आग में धर्म नेता, राजनेता घी डालने का काम करते है। समाज के उत्थान एवं एकता के लिये कोई भी प्रयास नहीं करना चाहता। कलायें ही समाज को शीतलता एवं समरसता प्रदान करने की क्षमता रखती है, प्रत्येक कला इतनी शक्ति तथा सामर्थ्य रखती है कि वह इन बुराइयों को पल में भुलाने का, जादुई माहौल तैयार कर देती है। कलाओं के सम्पर्क में आकर व्यक्ति चिन्ताओं से कुछ क्षण के लिए मुक्ति पा लेता है। विचारों में परिवर्तन आने लगता है। अपनेपन का अहसास होता है। धीरे–धीरे मानसिक दबाव से मुक्ति मिलती है। हर्ष एवं

शान्ति का अनुभव होता है। ऐसा अनुभव प्रदान करने की क्षमता रखने वाले नाट्यों का प्रदर्शन शनैं–शनैं संकुचित होता जा रहा है। इन्हें प्रचारित करने की आवश्यकता है।

2. आत्मनिर्भर भारत के सपने को धरातल पर उतारनें में सक्षम–

किसी भी देश के विकास में उसके युवा–वर्ग का बहुत महत्वपूर्ण योगदान होता है। भारतीय जनसंख्या के बढ़ने से बेरोजगारी निरन्तर विराट रूप लेती जा रही है। शिक्षा प्रदान करने के लिए सरकारें निरन्तर प्रयासरत है। सरकार के द्वारा ऋण देने का प्रावधान भी उपलब्ध है। इसके बावजूद यह समस्या निरन्तर विशाल रूप लेती जा रही है। सही मार्गदर्शन न मिलने के कारण युवा मोबाईल और सोशल मीडिया को अपना जीवन साथी बना चुका है। ये चीजें शाश्वत नहीं है, इसलिए विकारों की जननी बनती जा रही है। ऐसे में धन का दुरुपयोग एवं अभाव दोनों ही बेरोजगारी की समस्या को जटिल बना रहे हैं। ऐसी स्थिति में लोक संगीत नाट्य इस विकट समस्या से उबारने में सहायक सिद्ध हो सकते है। एक लोकनाट्य को प्रदर्शित करने के लिए कम से कम 10 से 15 लोगों की आवश्यकता पड़ती है। अधिक से अधिक 100 से 200 तक भी हो सकती है। यदि लोकनाट्यों को गम्भीरता से संरक्षित कर इनके विद्यालय प्रत्येक गाँव, नगर एवं महानगर में बनाये जाये तो बहुत बड़ी संख्या में कलाकारों को उत्पन्न कर आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। प्रत्येक लोकनाट्य में गीतकार, संगीतकार, अभिनेता, गायक एवं वादक रहते है। चित्रकार, सौन्दर्य कलाकार और मंच संचालक आदि भी लोकनाट्यों के प्रदर्शन में मुख्य भूमिका का निर्वाह करते है। इस प्रकार एक लोकनाट्य की प्रस्तुति में कितने अधिक लोगों को रोजगार प्राप्त हो सकता है। प्रत्येक क्षेत्र की लोककलाओं को संरक्षण प्रदान कर, उनके लिए साधन एवं अवसर प्रदान कराने से, एक बहुत बड़े वर्ग को बेरोजगारी के अभिशाप से छुटकारा मिल सकता है एवं आत्मनिर्भरता की ओर एक ठोस कदम भारतीय समाज का रख जायेगा। देश के कोने–कोने में अन्न–धन के पर्याप्त भंडार होगें। बुजुर्ग कलाकार नवीन एवं बाल कलाकारों को प्रशिक्षित करेगें। जिससे वह स्वयं को बोझ नहीं समझेगें। उनका मन भी लगा रहेगा। साथ ही सबके प्रयत्नों से लोकनाट्यों की परम्परा में नवीन अध्याय का समावेश होगा।

3. खुशहाली में सहायक–

भारतीय समाज जिस नीरसता से गुजर रहा है वह विश्व सूची में भी अंकित हो गया है। भारत 144वें स्थान पर 'विश्व खुशहाली सूचकांक' में स्थित है। यह बहुत विचारणीय विषय है। भारतीय मानसिकता के चलते समाज से खुशी एवं आनन्द गायब होता जा रहा है। हर दिन उत्सव की तरह मानने वाले भारतीय, तंगहाली से बोझिल हो गये है। धन की आवश्यकता की पूर्ति होनी चाहिए, इसके साथ ही कार्य भी, मानव रुचि का हो, तभी खुशहाली आ सकती है। जो संरचना लोकनाट्यों की होती है उसके माध्यम से धन, यश एवं खुशहाली प्राप्त की जा सकती है। ऐतिहासिक घटनायें साहस का संचार करती है। हमारे पूर्वजों के बलिदान ने हमें आज स्वतंत्र भारत में सांस लेने के योग्य बनाया, वर्तमान समय में निरन्तर कुछ न कुछ घटित हो होता रहता है। उसको नाट्यों के माध्यम से प्रदर्शित करना, अपने बच्चों से उसका प्रदर्शन करवाना, एक सुखद अनुभव होता है। इस प्रयास से खुशी–आनन्द का संचार निश्चित ही होगा। जब प्रत्येक स्थान पर छोटे–छोटे समूहों में लोकसंगीत नाट्यों का प्रदर्शिन होगा। वृद्ध कलाकारों को सम्मान मिलेगा, बाल कलाकारों को प्रोत्साहन मिलेगा एवं घर के बड़े–बूढ़ो का आशिर्वाद मिलेगा, तब अवश्य ही खुशी का संचार होगा। घर के बच्चे बढ़–चढ़कर लोक नाट्यों में प्रतिभागिता करेगें तो उनका शारीरिक, मानसिक तथा आर्थिक विकास ही सही मायने में खुशहाली का सूचक होगा।

4. टी.बी. एवं मोबाईल से मुक्ति में सहायक–

आज के समय में प्रत्येक माता–पिता बच्चों के चिड़चिड़े स्वभाव से परेशान है। उसके स्वभाव में गुस्सा, चीखना–लड़ना आदि विकार अपना स्थान बना चुके हैं। किसी की बात को न समझना, आरोप–प्रत्यारोप के माध्यम से स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करना। शारीरिक विकास का न होना, एकांतवास में बने रहना, सिर्फ मोबाईल तथा टी.बी. को ही अपनी दुनियाँ समझना। जब किसी प्रकार की कोई सक्रिय गतिविधि का न हो तब भी वह मोबाइल तथा लैपटॉप में उलझे ही रहेंगे क्योंकि मानव मस्तिष्क की संरचना ही ऐसी है, कि उसमें निरन्तर कोई न कोई विचार आता ही रहता है। वह विचार है अच्छा अथवा बुरा,इससे मस्तिष्क का कोई प्रभाव, नहीं पड़ता उसे निरन्तर क्रिया–प्रतिक्रिया करनी होती है। ऐसे में यह हमारा दायित्व है कि हम अपनी संतान को

नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों से अवगत करायें एवं सक्रिय कार्यों में संलग्न कर दें जिससे उसका ध्यान मोबाइल तथा टी.बी. जैसे– इलैक्ट्रोनिक उपकरणों में न जाये। ये चीजें जिस आवश्यकता की पूर्ति के लिए है, इनसे वही कार्य लिया जाना चाहिए। लोकनाट्यों में उसकी रुचि के अनुरूप उसे कोई भी दायित्व सौंप दिया जाना चाहिए जैसे– गायन, वादन, नृत्य, कथावाचक, सौन्दर्य, कलाकार, वक्ता, लेखक एवं हास्य कलाकार इन विकल्पों में से, वह अवश्य ही, किसी न किसी का चयन करेगा एवं उसे विकसित करने में संलग्न हो जायेगा।

5. मस्तिष्क (मानसिक) के विकास में सहायक–

यह एक शोध में प्रमाणित हो चुका है कि एक कलाकार का मस्तिष्क किसी अन्य की अपेक्षा अधिक रचनात्मक होता है। मानसिक रूप से कलाकार प्रत्येक परिस्थिति के लिए तैयार रहता है। एक स्वस्थ एवं रचनात्मक मस्तिष्क ही स्वस्थ समाज का निर्मित करने में सहायक होता है। वर्तमान समय में समाज की स्थिति इतनी दयनीय एवं विकृत हो चुकी है कि नवांकुरों को उससे बचाना एक बहुत बड़ी चुनौती बन गया है। मोबाइल युग में नवाँकुरों को किसी कार्य को करने से रोकना या टोकना विद्रोह उत्पन्न करता है क्योंकि न तो बच्चों में और न ही बड़ों में सहने की क्षमता बची है। धैर्य, संतोष एवं शान्ति जैसे शब्दों को, युवा पीढ़ी नहीं सुनना चाहती। अधिक से अधिक पाने की लालसा रह गई है। ऐसे में इनके प्रबल प्रवाह को रोकना असम्भव है, किन्तु उस प्रवाह को मोड़ा अवश्य जा सकता है। सामाजिक बुराईयों से रोकने के लिए आज की पीढ़ी को किसी न किसी रचनात्मक कार्य में संलग्न करने की आवश्यकता है। वह लोकनाट्य शैलियाँ ही है, जिनमें रचनात्मक कार्यों की अदम्य सम्भावनायें है। एक–एक आयाम में विरले खजाने छिपे हुये है। आवश्यकता उनको संयुक्त करके प्रस्तुत करने की है। एक कलाकार विश्व को अपनी ओर आकर्षित करने की क्षमता रखता है। समाज को सुधारने के प्रयास में एक लोकनाट्य कर्मी भी बहुत बड़ी भूमिका का निर्वाह कर सकता है। आवश्यकता प्रोत्साहित करने की है।

6. पाठ्यक्रम को समझाने में सहायक–

लोकनाट्य शैलियों पर यदि पाठ्यक्रम आधारित कथानकों का निर्माण किया जाये, तो वह

बालकों को, विद्यार्थियों को एवं शोधकर्ताओं को विषय वस्तु समझाने में बहुत सहायक सिद्ध होगें। साक्षरता के कार्यक्रम के तहत लोकनाट्य कलाकारों को सरकार की तरफ से गाँव–गाँव में भेजा जाता है। वह समाज को जागरूक कर शिक्षा ग्रहण करने एवं समाज में उच्च स्थान प्राप्त करने का संदेश देकर जाते है। कुछ लोग इससे प्रेरणा लेकर अपने बच्चों को शिक्षित करते है एवं कुछ सिरे से नकार देते है। किन्तु शोधार्थी के मत से यदि 10 प्रतिशत लोग भी प्रेरित होकर अपने बच्चों को काम–काज से, समय निकालकर पढ़ाने पर जोर देते है, तो इसका अर्थ है वह कार्यक्रम सफल रहा। जिस प्रकार प्रयासरत लोकनाट्य शैलियाँ गाँव–गाँव जाकर, शहर–शहर जाकर लोगों को प्रेरित करती है, उसी प्रकार विद्यालीन शिक्षा में, स्कूल–कॉलेजों में, बच्चों में शिक्षा के प्रति रुचि उत्पन्न करने के लिए भी, यह योजना कारगर सिद्ध हो सकती है। बच्चे लोकनाट्यों को सर्वप्रथम करना सीखें, उसके पश्चात् पाठ्यक्रम के आधार पर बारी–बारी से लोकनाट्यों के आयोजन करें। इससे न केवल शिक्षा की ओर रुझान बढ़ेगा अपितु पाठ्यक्रम समझ में भी आ जायेगा। उसे लिखने और याद करने में सहायता मिलेगी। रचनात्मकता से परिपूर्ण लोकनाट्यों में लगे रहने से विद्यार्थीगण नकारात्मक विचारों से भी दूर रहेगें।

7. इतिहास को समझाने में सहायक–

भारतीय संस्कृति वीरत्व, साहस, पराक्रम, क्षमा, दया, करुणा एवं धर्म के आधार पर विकसित हुई है। इसका इतिहास इन नैतिक गुणों से परिपूर्ण है। श्री पृथ्वीराज के द्वारा मोहम्मद गौरी को 17 बार क्षमा दान देना, राजा दशरथ का वचन–पालन हेतु प्राण त्याग देना, रानी लक्ष्मीबाई का झांसी को बचाने के लिए आखिरी सांस तक लड़ना, महाराणा प्रताप का अपने राष्ट्र को बचाने के लिए घास की रोटियां खाना, किन्तु किसी भी कीमत पर मुगलों के आगे न झुकना, क्षत्रपति शिवाजी राजे का अपने स्वराज्य को अन्त तक कायम रखना आदि ऐसी असंख्य ऐतिहासिक घटनायें हैं जो किसी के भी रक्त में उबाल पैदा करने की क्षमता रखती है। राष्ट्र प्रेम, धर्म पर अडिग रहना, ईश्वर के प्रति समर्पण आदि संदेशो से, सुसज्जित यह लोकनाट्य शैलियाँ इतिहास की इतनी सुन्दर तस्वीर प्रस्तुत करती है कि मन में अपने राष्ट्र के लिए समर्पित होने को, रक्त हिलोरे खाने लगता है, इन वीरों की गाथा को सुन, मन स्वतः ही इन वीरों के चरणों में

नतमस्तक हो जाता है। वीरों के द्वारा देश को आजादी मिली, उन दृश्यों के सन्दर्भ में विचारकर मस्तक गर्व से ऊँचा हो जाता है। इन गाथाओं को आज पुनः प्रसारित एवं प्रचारित करने की आवश्यकता है। यह कार्य लोकनाट्यों के अतिरिक्त और कोई नहीं कर सकता। अतः इन्हें प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

8. सरकारी खजाने की वृद्धि में सहायक—

लोकनाट्य की प्रभुता का प्रचार व प्रसार करने से, यह न केवल भारतीय समाज को लाभान्वित करेगें अपितु विश्वभर के लोगों को भी लाभ पहुँचायेगें। संताप से मुक्ति दिलाने वाले, स्वस्थ मनोरंजनकर्त्ता लोकनाट्य, विश्व की विकृतियुक्त मानसिकता के नाशक बनने की क्षमता रखते है। यह सर्वविदित है कि 'सांगीत शिरोमणि पं. नथाराम गौड़' ने चीन, नेपाल, रूस, दक्षिण अफ्रिका आदि देशों में, सांगीत—नौटंकी तथा स्वांग का प्रदर्शन कई—कई महीनों तक किया तथा भारतीय संस्कृति का प्रचार व प्रसार किया। ऐसा करने से भारतीय लोक संस्कृति की लोकप्रियता में भी इजाफा भी हुआ। यदि 'पं. नथाराम गौड़' देश—दुनियाँ में स्वांग, नौटंकी का प्रचार—प्रसार न करते तो आज विश्वभर में होने वाली नौटंकी का शायद अस्तित्व भी न होता। इन लोकनाट्यों के प्रदर्शन से विदेशों से प्राप्त आय का, कुछ अंश कर के रूप में सरकारी खजाने में भी समर्पित किया जाता है। यदि इसी प्रकार सभी लोकनाट्यों को प्रोत्साहित कर प्रचारित एवं प्रसारित किया जाये तो यह अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होगें जिससे न केवल कला का सम्मान होगा अपितु देश के सम्मान के साथ खजानें में भी वृद्धि होगी।

9. भारतीय संस्कृति के संरक्षण में सहायक—

यह लोकनाट्य विधायें भारतीय संस्कृति के संरक्षण में भी बहुत सहायक है। भारतीय संस्कृति को पोषित करने वाले कारकों को, नित्य नवीन स्वरूप प्रदान करना इन लोकनाट्यों की विशेषता है। वर्तमान समय में भारतीय संस्कृति की रक्षा करने के साथ—साथ उसका संरक्षण भी आवश्यक है। भारतीय संस्कृति के आयामों को सुरक्षित रखा जाये जैसे—भारतीय रीति—रिवाज, तीज—त्यौहार, पहनावा, संगीत, आध्यात्म एवं देशभक्त महापुरुषों का जीवन चरित्र, प्रकृति एवं ऋतुओं के मनोरम चित्रण का वर्णन, दर्शन, वेद, उपन्यास एवं पुराणों की विस्तृत जानकारी, इन्हीं

लोकनाट्यों में इतने सरल रूप में प्रस्तुत की जाती है कि छोटा बच्चा भी उनके भावार्थ को समझने में समर्थ होता है। रामलीला लोकनाट्य में बच्चों की भूमिका भी अहम् रहती है। छोटे–छोटे बच्चे श्री राम–लक्ष्मण के स्वरूप में बहुत ही मन–मोहक लगते है। माता–पिता भी बहुत उत्साह एवं प्रसन्नता से अपने–अपने बालकों को प्रतिभागिता कराते है एवं स्वयं गौरवान्वित महसूस करते है। यह सभी कार्य लोकनाट्यों के द्वारा ही सम्भव है। अतः लोकनाट्यों का संरक्षक अत्यन्त आवश्यक है।

10. आध्यात्मिक एवं नैतिक उत्थान में सहायक–

वर्तमान समय के सामाजिक परिवेश को देखते हुये ऐसा अनुभव होता है कि भारतीय संस्कृति के नैतिक मूल्यों को नौनिहालों तक, किस प्रकार प्रेषित किया जाये? हमारे आध्यात्मिक मूल्यों में निहित गूढ़ रहस्यों को, अपने बालकों तक कैसे पहुँचाया जाये? यह कार्य लोकनाट्यों के माध्यम से बहुत–ही सरलता से किया जा सकता है। संगीत लोकनाट्यों में निहित कथानक, संगीत, अभिनय, वाद्य–प्रयोग एवं संवाद–योजना का ऐसा संयोजन निहित है जो प्रतिपल नैतिक एवं आध्यात्मिक उत्थान की ओर अग्रसर करता है।

नैतिक मूल्यों एवं आध्यात्मिक मूल्यों के विकास से समाज को नई दिशा प्रदान की जा सकती है। इनके प्रसार से असामाजिक तत्वों को जन्म नहीं मिलेगा, समाज में विघटनकारी शक्तियाँ प्रवेश नहीं कर पायेगी एवं व्याप्त नहीं होगी। समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए लोकनाट्यों से अद्भुत एवं सशक्त साधन अन्य कोई नहीं है, जो सजीव रूप में समाज को संदेश प्रदान कर निश्चित ही नकारात्मकता को दूर कर सकारात्मकता का प्रकाश फैला देगें। भारतीय ग्रामीणजन बहुत ही निर्मल एवं कोमल मन के होते है, जो भारत देश की परम्परा का निर्वाह करते हैं यदि भारत की असली तस्वीर देखनी है तो गाँवों को देखो, क्योंकि वही भारतीयता के दिग्दर्शन सम्भव है। बड़ों का आदर–सम्मान, अतिथिगणों का आतिथ्य जिस निर्मल एवं निश्छल मन से ग्रॉमों में देखने को मिलता है, वह अन्यत्र देखने को नहीं मिलता। उसी मिट्टी का समावेश लोकनाट्यों में परिलक्षित होता है। अतः भारतीय प्राचीन परम्परा के आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों का विकास लोकनाट्यों के द्वारा ही सम्भव है।

संगीत लोकनाट्यों में जिन–जिन गुणों का समावेश है उन गुणों के विकास के लिए लोकनाट्यों का संरक्षण अत्यन्त आवश्यक है। शोधार्थी को दिये गये साक्षात्कारों में विभिन्न लोक कलाकारों, साहित्यकारों एवं कलाविदों ने अपने एवं कला के संघर्ष के सम्बन्ध में चर्चाऐं की एवं जो लोककला एवं कलाकारों को सम्मान प्राप्त होना चाहिए, वह न मिलने पर अपनी निराशा को भी व्यक्त किया। सही मायने में जो कार्य लोकनाट्यों के उत्थान के लिए होने चाहिये वह नहीं हो रहा है। सरकारी नाट्य संस्थाओं में जिन व्यक्तियों को कार्य हेतु नियुक्त किया गया है, उन्हें न तो लोकनाट्यों के सन्दर्भ में ज्ञान है, न ही सरकारी सुविधाओं के सन्दर्भ में। सरकार के द्वारा निमित्त अनुदान, लोकनाट्यों एवं लोककलाकारों तक नहीं पहुँच पाता क्योंकि, उसकी कागजी कार्यवाही इतनी जटिल है कि उसे समझना भोले लोककलाकारों के बस में नहीं है। अतः सरकारी तंत्र को इसमें कुछ सरलता करनी चााहिये। जिससे सरकारी योजनाओं का लाभ समान रूप से सभी ग्रामीण एवं शहरी कलाकारों को मिल सके।

इसके अतिरिक्त **उत्तर–प्रदेश संगीत नाट्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त डॉ० खेमचन्द यदुवंशी जी** ने लोकनाट्यों के उत्थान के लिए निम्नलिखित उपाय निर्दिष्ट किये है–

1 लोकनाट्य के वास्तविक स्वरूप को समझना।

2 नई पीढ़ी के समक्ष प्रस्तुत कर, उसके महत्व को समझना।

3 नई पीढ़ी के लिए लोकनाट्यों के इतिहास को प्रस्तुत करना।

4 लोकनाट्यों के विभिन्न स्वरूप कथानकों का संरक्षण व प्रचार–प्रसार।

5 पुरानी पीढ़ी के लोकनाट्य कलाकारों द्वारा नई पीढ़ी को प्रशिक्षण प्रदान करना।

6 लोकनाट्यों का आधुनिक समय के अनुरूप प्रस्तुतीकरण।

7 लोकनाट्य में नई पीढ़ी को शामिल करना।

8 लोकनाट्यों के प्रस्तुतीकरण हेतु नई पीढ़ी को प्रोत्साहन।

9 पुरानी पीढ़ी के लोकनाट्य कलाकारों को उनके द्वारा किये गए योगदान हेतु सम्मानित व पुरस्कृत करना।

10 देश व प्रदेश की सरकारों द्वारा लोकनाट्यों को आर्थिक लाभ से जोड़ने हेतु योजनाओं से जोड़ना।

11 लोकनाट्यों के मूल स्वरूप को यथावत् रखते हुए आधुनिक परिवेश व तकनीकी से जोड़ा जाए।

12 लोकनाट्यों के उत्थान हेतु वर्तमान परिदृश्य के कथानक लिखकर, जनता के बीच मंचित कराऐ जायें।

13 संस्कृति मंत्रालय लोकनाट्यों के उत्थान हेतु कार्य कर रही संस्थाओं व इसके कलाकारों को अनुदान प्रदान करे।

14 लोकनाट्यों के इतिहास व स्वरूप का डिजिटलाइजेशन कर सोशलमीडिया पर उपलब्ध कराया जाये।

15 क्षेत्रीय जनता व धनी मानी व्यक्त्यिों को लोकनाट्यों के उत्थान हेतु आर्थिक सहयोग करना चाहिये।

प्रस्तुत सुझाव न केवल लोकनाट्यों का पुर्नउत्थान करेंगें अपितु लोकनाट्यों को जीवन दान देने में भी सक्षम होगें।

इन सुझावों के अतिरिक्त कुछ अन्य सुझाव विभिन्न विशेषज्ञों ने प्रदान किये, जो निम्नवत् है–

1 स्कूल एवं कॉलेजों में अनिवार्य रूप से लोकसंगीत नाट्यों को सिखाया जाये।

2 इसके गीत–संगीत, लेखन एवं वाद्य–वादन को सिखाने के लिए शिक्षकों की भर्ती की जाये।

3 लोकनाट्यों को सरकारी उत्सवों में अनिवार्य रूप से स्थान प्राप्त हो।

4 प्रत्येक नगर में लोकनाट्य केन्द्रों की स्थापना हो जिससे वृद्ध कलाकार वहाँ युवा वर्ग को शिक्षण प्रदान कर लोकनाट्य की जानकारी दे सके।

5 लोकनाट्य शैली के कथानकों को हिन्दी पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाये।

6 सरकारी दफ्तरों में लोकनाट्यों के अलग से विभाग बनाये जाये, जो भारतीय संस्कृति विभाग को कलाकारों एवं कला के सम्बन्ध में सही जानकारी प्रदान करें।

7 लोकनाट्य विभाग समय–समय पर नगर के लोकनाट्य कर्मियों के मध्य प्रतियोगिताये करायें, जिससे कलाकारों का प्रोत्साहन एवं आत्मविश्वास बढ़े।

8 भारतीय संस्कृति की पहचान विश्व पटल पर अमिट है। इसके विविध रंगों को निखारने की आवश्यकता है।

9 परिवर्तन ही संसार का नियम है, यह नियम सभी पर लागू भी होता है। लोकनाट्यों ने मूल को परिवर्तित नहीं किया, परन्तु समयानुसार प्रदर्शन में कुछ बदलाव अवश्य किये हैं। यदि कुछ परिवर्तन की आवश्यकता और है तो वह कार्य सरकारी तंत्र को अपने स्तर से, इनके संरक्षक के लिए करना चाहिये, जैसे– सरकारें अन्य क्षेत्रों के लिए विषय–विशेषज्ञों को नियुक्त करके प्रशिक्षण दिलवाती है। वैसे ही लोकनाट्य कलाकारों को भी वही महत्व एवं सम्मान मिलना चाहिए।

अतः शोधार्थी का यही कथन है कि यह भारतीय धरोहरें हैं जिन्हें निश्चित समय से यदि सुरक्षित नहीं किया गया तो यह संस्कृति एवं समाज की बहुत बड़ी क्षति होगी। जिसकी पूर्ति करना किसी भी सूरत में सम्भव न होगा। यह विश्व पटल पर भारतीय संस्कृति को गौरव दिलाने का श्रेयस कार्य कर सकती है। समाज एवं राष्ट्र को संवारने के लिए इनकी बहुत अधिक आवश्यकता है।

संक्षिप्तिका–

प्रस्तुत शोध परियोजना जिसका शीर्षक ''लोक संगीत नाट्य विधाओं का सांगीतिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक पक्ष'' है। यह अध्ययन लोक संगीत नाट्य विधाओं के अवर्णनीय गुणों को परिलक्षित करने का एक प्रयास है। लोक संगीत नाट्य विधायें प्रदर्शन की वस्तु नहीं मानी गई हैं, अपितु इन्हें दर्शकों और अभिनेताओं के जीवन का अंग बताया गया है। मानवीय जीवन में घटित घटनाओं को विभिन्न साजो–सामान के साथ एवं गायन, वादन एवं नृत्य को उकेरते हुऐ प्रस्तुत किया गया है। यह लोक जीवन की झाँकी भी माने जाते हैं। सरल काव्य पाठों, तालों, धुनों एवं वेशभूषा के माध्यम से कालान्तर से लोक संगीत नाट्य अपनी अमिट छवि को बनाये हुये है। इन्हें पारम्परिक नाट्य, लोकधर्मी नाट्य, पचंमवेद के प्रणेता आदि नामों से उल्लखित भी किया जाता

है। लोकनाट्यों की सामूहिक अभिव्यक्ति कभी घर के आंगन का दृश्य दिखलाती है, कभी युद्ध की स्थिति को परिलक्षित करती है। सरलता से संवादों के द्वारा सम्पूर्ण कथानक का विधान कर दिया जाता है। संगीतमय संवादों के द्वारा कथानक के पूर्ण होने का पता ही नहीं चलता। जीवन की सामाजिक संरचना को उसके अन्तरद्वन्दों एवं विकास की प्रक्रिया को लोकनाट्यों ने सचित्र प्रस्तुत करते हुए नैतिकता एवं आध्यात्मिकता का संदेश दिया है।

प्रस्तुत परियोजना में शोधार्थी ने भारतीय लोक संगीत नाट्यों में कतिपय भगत, स्वांग, नौटंकी, अंकियानाट, भवाई, यात्रा, लावनी, हिन्दी ख्याल लावनी, राजस्थानी ख्याल एवं यक्षगान के सन्दर्भ में विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। यह सभी लोक संगीत नाट्य विधायें स्वयं में परिपूर्ण है एक–एक विधा में अनेकों शोध परियोजनाओं की सम्भावना है। जिज्ञासावश इनके संक्षिप्त अध्ययन के उद्देश्य से शोधार्थी ने सागर रूपी विशाल विधाओं के किंचित स्वरूप का परिचय प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। यह विधायें सम्पूर्ण भारत के कोने–कोने में विकसित है। कहीं–कहीं इनकी प्रसिद्धी बहुत अधिक है, कहीं–कहीं विलुप्ति की कगार पर भी है। इनके संरक्षण एवं संवर्धन की दृष्टि के उद्देश्य से भी शोधार्थी ने इनका अध्ययन एवं विश्लेषण किया है। यह विधायें एक विशाल माला के विविध मोती के समान है। सभी एक उद्देश्य को लेकर निरन्तर तत्पर है। भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं परम्पराओं को जीवित रखने का उद्देश्य लेकर, यह विधायें प्रदर्शन करती है। गाँव, शहर, महानगर, संस्थाओं, सम्मेलनों एवं मेलों आदि के आयोजनों में यह बहुत उल्लास एवं उमंग के साथ संलग्न होते है। प्रदर्शनों में अपनी सम्पूर्ण सामर्थ्य को लगाकर आयोजनों को सफल बनाते हैं। किन्तु एक प्रश्न शोधार्थी के मन में सदैव जाग्रत होता है वह है? इन पारस्परिक विधाओं के प्रति समाज एवं सरकारें इतने उदासीन क्यों बनी हुयी है। जो सम्मान एवं आदर के ये अधिकारी है, वह इन विधाओं प्राप्त क्यों नहीं हो रहा। सरकार को इनके कलाकारों के जीवन यापन हेतु बड़े कदम उठाने चाहिए, साथ ही समाज को भी इन विधाओं में अपनी रुचि एवं रुझान को बढ़ाना चाहिए।

समस्या कथन–

'लोक संगीत नाट्य विधाओं का सांगीतिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक पक्ष।'

उद्देश्य–

लोक संगीत नाट्य विधाओं का अध्ययन निम्न बिन्दुओं के आधार पर किया गया–

1 लोक संगीत नाट्यों में प्रयुक्त राग, ताल, वाद्य एवं नृत्य पक्ष की दृष्टि से अध्ययन।

2 लोकसंगीत नाट्यों का अध्ययन नैतिक एवं आध्यात्मिक पक्ष की दृष्टि से।

3 विविध लोक संगीत नाट्यों के गीतों का स्वरांकन कर, संकलित करने की दृष्टि से अध्ययन।

संकलित तथ्यों का अध्ययन निम्न अध्यायों में किया गया है–

प्रथम अध्याय– इस अध्याय का शीर्षक 'लोक संगीत नाट्य विधाओं का उद्‌भव एवं विकास, है। प्रस्तुत अध्याय में शोधार्थी ने लोक, संगीत एवं नाट्य के विस्तृत अर्थ को प्रस्तुत किया है। लोक की व्यापकता को परिलक्षित करते हुए लोक संगीत नाट्यों की विशेषताओं का वर्णन किया है।

द्वितीय अध्याय– इस अध्याय का शीर्षक ''लोक संगीत नाट्य प्रकारों का संक्षिप्त विवरण'' है। प्रस्तुत अध्याय में यक्षगान, अंकियानाट, भगत, स्वांग, नौटंकी, लावनी, ख्याल, जात्रा (यात्रा), भवाई आदि लोक संगीत नाट्यों का प्रस्तुतीकरण, श्रृंगार एवं वेश–विन्यास, कथानक, संवाद, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, क्षेत्र एवं प्रदर्शन सम्बन्धी तत्वों का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय– प्रस्तुत अध्याय का शीर्षक ''लोक संगीत नाट्यों का सांगीतिक पक्ष'' है। प्रस्तुत अध्याय में शोधार्थी ने विभिन्न लोक संगीत नाट्यों की करीब 38 बन्दिशों को स्वरलिपिबद्ध कर प्रस्तुत किया है एवं लोक संगीत नाट्यों में प्रयुक्त राग, ताल, वाद्य विधान एवं नृत्य संरचना को भी स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

चतुर्थ अध्याय– प्रस्तुत अध्याय का शीर्षक 'लोक संगीत नाट्यों का नैतिक पक्ष' है। प्रस्तुत अध्याय में शोधार्थी ने लोक संगीत नाट्यों के कथानकों में वर्णित नैतिक शिक्षा, मानव मूल्य, नैतिक आयाम एवं नैतिकता का उल्लेख किया है। लोक संगीत नाट्यों में नैतिकता प्रेरक कथानकों का प्रदर्शन किया जाता है। शोधार्थी ने उनका उल्लेख प्रस्तुत अध्याय में किया है।

पंचम अध्याय– प्रस्तुत अध्याय का शीर्षक 'लोक संगीत नाट्यों का आध्यात्मिक पक्ष' है। प्रस्तुत अध्याय में शोधार्थी ने विभिन्न कथानकों में वर्णित आध्यात्मिक तत्वों को उदाहरणसहित प्रस्तुत

किया है। लोक संगीत नाट्यों में आध्यात्म एवं भक्ति का अतिरेक है। आध्यात्म को लोक संगीत नाट्यों की आत्मा एवं जन्म का कारण भी माना जाता है।

उपसंहार– उपसंहार में शोधार्थी ने लोकसंगीत नाट्यों के विकास एवं कलाकारों के लिए पेंशन से सम्बन्धित उपायों के सन्दर्भ में विवरण प्रस्तुत किया है, साथ ही लोक संगीत नाट्य विधाओं के प्रचार एवं प्रसार से समाज एवं राष्ट्र को क्या–क्या लाभ प्राप्त हो सकते हैं। उसका विवरण भी प्रस्तुत किया है। इसके कुछ अंश निम्नवत् है–

1 भारतीय लोक संगीत विधायें भारतीय एकता एवं अखण्डता के संरक्षण में सहायक है।

2 भारतीय नागरिकों को आत्मनिर्भर बनाने के सपने को, धरातल पर उतारने में सक्षम है।

3 भारतीय समाज को खुशहाली की विश्व सूची में, प्रथम पंक्ति में लाने में सहायक है।

4 टी.बी. एवं मोबाईल से हो रहे दुष्परिणामों से मुक्ति दिलाने में सहायक है।

5 मानसिक स्वास्थ्य को विकसित करने में सहायक है।

6 भारतीय पाठ्यसामग्री को सरलता से समझाने एवं पठन–पाठन कराने में सहायक है।

7 भारतीय इतिहास के गौरव एवं गरिमा का पूर्ण दिग्दर्शन कराने में सक्षम है।

8 सरकारी खजाने की वृद्धि में सहायक है।

9 भारतीय संस्कृति की गौरवमयी गाथा एवं वैविध्यपूर्ण विरासत के संरक्षण में सहायक है।

10 भारतीय समाज के आध्यात्मिक एवं नैतिक उत्थान में पूर्णरूपेण सहायक है।

इसके अतिरिक्त लोक संगीत नाट्यों के उत्थान के लिए निम्न उपाय दिये गये है–

- लोक संगीत नाट्य के वास्तविक स्वरूप को समझकर युवा वर्ग के समक्ष प्रस्तुत कर इनके महत्व को समझाना।
- लोक संगीत नाट्यों के गौरवमयी इतिहास को युवा वर्ग के समक्ष प्रस्तुत करना।
- इनके कथानकों का यथवत् संरक्षण एवं संवर्धन किया जाना।
- वृद्ध कलाकारों के द्वारा युवा वर्ग को प्रशिक्षण प्रदान कराना।
- लोक विधाओं का आधुनिकीकरण किया जाना चाहिए।

- विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में लोक संगीत नाट्यों का प्रशिक्षण अनिवार्य रूप से प्रदान किया जाये।
- लोक संगीत नाट्यों को राष्ट्रीय उत्सवों में अनिवार्य रूप से स्थान प्राप्त होना चाहिए।
- विद्यालयों में लोक संगीत शिक्षकों की भर्ती होनी चाहिए।
- लोक नाट्य विधाओं को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए।
- लोक नाट्यों के प्रदर्शन के लिए प्रत्येक सरकारी विभाग में लोक संस्कृति विभाग का निर्माण किया जाये, जो समय–समय पर प्रत्येक स्तर पर हो रहे कार्यक्रमों की जानकारी ले एवं उनके उत्थान के लिये कार्य करे।

अतः प्रस्तुत शोध परियोजना के सम्बन्ध में शोधार्थी का यही कथन है कि यह लोक संगीत नाट्य भारतीय धरोहरें हैं जिन्हें निश्चित समय से यदि सुरक्षित नहीं किया गया तो यह भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की बहुत बड़ी क्षति होगी जिसकी पूर्ति करना असम्भव होगा। यह विधायें विश्व पटल पर भारतीय संस्कृति को गौरव, सम्मान दिलाने का श्रेयस कार्य कर रही है। समाज एवं राष्ट्र को संवारने के लिए इनकी बहुत अधिक आवश्यकता है।

सम्भावनायें–

लोक नाट्यों की प्रत्येक विधा में बहुत सी सम्भावनायें हैं। इसके कथानकों, वेश–विन्यास, प्रस्तुतिकरण, कलाकार आदि पर सम्बन्धित कार्य किये जा सकते हैं। लोकनाट्यों को लेकर अनन्त विषयों पर कार्य किये जा सकते हैं। लोक संगीत नाट्यों में नैतिकता, अध्यात्मिकता एवं लोक संगीत सम्बन्धी शोध सम्भावनायें बहुत विशाल रूप में निहित है। प्रत्येक लोक संगीत नाट्य के क्षेत्र एवं भाषा–साहित्य सम्बन्धी अनन्त सम्भावनायें है। लोक संगीत नाट्यों के अखाड़ों अर्थात् मण्डलियों में निहित गहन एवं गूढ़ रहस्यों सम्बन्धी शोध सम्भावनायें हैं।